Class - I. Com XII
Subject - EPS
Title - Setting up of an Enterprise
Lecture - 11
Prepared by - Dr C P Sahu
Marwari College - Darbhanga.

उपक्रम की स्थापना :- (1)

जब कोई नई व्यवसाय की स्थापना होती है तो वहाँ रोजगार, उत्पादन, विनियोग एवं आय में वृद्धि होती है। इससे समाज के सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक विकास की संभावनाएँ भी प्रबल हो जाती है।

जब साहसी की योग्यता, क्षमता, ज्ञान एवं सृजनशीलता की शक्ति बाजार की वर्तमान अवस्था से संतुलित हो जाती है तो नये व्यवसाय का जन्म व्यावसायिक जगत में हो जाता है। स्थापना से पहले उद्यमी इसकी रणनीति बनाता है कि सिर्फ व्यवसाय आरम्भ करना ही पर्याप्त नहीं है बल्कि ऐसे उपाय बनाना रखने होते हैं कि यह व्यवसाय औद्योगिक जगत में बढ़े, फूले-फले और विकास की ओर अग्रसर हो सके।

जॉन थॉमसन साहेब का कहना है कि "रणनीतियाँ वे हैं जिन्हें उपक्रम करती है, यह वैसी राह है जिस पर वह चलती है तथा यह वह निर्णय है जिसके द्वारा यह सफलता के एक निश्चित स्तर तक पहुँचती है"।

इस प्रकार व्यवसाय के आरम्भ करने में पाँच 'M' की आवश्यकता होती है - (i) श्रम (ii) कच्चा माल (iii) मशीन (iv) मुद्रा (v) बाजार

जिस प्रकार मानव शरीर का निर्माण पाँच तत्वों से बना है उसी प्रकार उपक्रम रूपी शरीर में भी उपर्युक्त पाँच तत्वों को होना आवश्यक है।

उपर्युक्त तत्वों निम्न रूप से स्पष्ट कर सकते हैं-

(1) श्रम (~~Labour~~) (MEN) - श्रम शक्ति के आधार पर ही उपक्रम की सफलता निश्चित होती है। व्यवसाय को चलाने

के लिए कुशल या अकुशल दोनों प्रकार के श्रम की (2) आवश्यक होती है। इन श्रमिकों से उचित कार्य लेने के लिए प्रशासनिक कर्मचारी की जरूरत होती है। उपक्रम में श्रम शक्ति योजना तैयार करके योग्य प्रशिक्षित कर्मचारियों की नियुक्ति की जाती है। समय-समय पर कर्मचारियों को प्रशिक्षित करने और अभिप्रेरित करने की योजना भी बनाना चाहिए।

(2) कच्चा माल- (Raw Material) स्थापना से पूर्व कच्चे माल की उपलब्धता, किस्म, मूल्य, आपूर्ति की निरंतरता इत्यादि पर विचार कर लेना चाहिए। कच्चे माल के अभाव में उत्पादन ही बन्द हो जायेगा।

(3) मशीन Machine - उत्पादन के लिए नये मशीन यंत्र की जरूरत होती है। स्थापना से पहले नये मशीन का पूर्ण खरीद लेना चाहिए। इसे चलाने के लिए तकनीशियन की व्यवस्था, यंत्र की क्षमता, किस्म, मूल्य, मरम्मत की सुविधा पर भी विचार कर लेना चाहिए।

(4) मुद्रा (Money) - पूँजी व्यापार का जीवन रक्त है इसके बिना कोई भी कार्य नहीं हो सकता है। पूँजी की व्यवस्था के लिए साहसी स्वयं पूँजी अपना लगाता है और कमी होने पर बैंक से ऋण भी लेता है। व्यवसाय आरम्भ होने के बाद पूँजी की कमी होने पर व्यवसाय चड़मड़ा जा सकता है।

(5) बाजार - (Market) उपक्रम शुरू करने से पहले बाजार में माँग का भी अंदाजा लगाना चाहिए और उसी के अनुसार ही बाजार में माल की पूर्ति करना चाहिए। यदि माँग अधिक है और पूर्ति कम कर पाते हैं तो लाभ में कमी आ जाती है। यदि उत्पादन माँग की तुलना में अधिक हो जाय तो भी लाभ में कमी आयेगी।

उपर्युक्त तत्वों के साथ-साथ स्थान, निर्माण प्रक्रिया एवं प्रोजेक्ट प्रतिवेदन पर भी ध्यान देना चाहिए। तब जाकर ही व्यापार या उपक्रम की स्थापना करना चाहिए।